'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 अंक 3 19 अप्रैल, 2019 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

जौहर श्रद्धांजलि समारोह मनाया

प्रतिवर्ष की भांति जौहर स्मृति संस्थान के तत्वाधान में आयोजित होने वाला जौहर श्रद्धांजलि समारोह 31 मार्च को चित्तौड़गढ़ किले में गौरवपूर्ण तरीके से मनाया गया। मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य विश्वराजसिंह मेवाड़ की अध्यक्षता में आयोजित समारोह को राजस्थान सरकार के काबिना मंत्री प्रतापसिंह खाचरियावास, राज्यसभा सदस्य हर्षवर्धनसिंह डूंगरपुर, तारातरा महंत प्रतापपुरी जी, चित्तौड़गढ़ लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस के प्रत्याशी गोपालसिंह ईड़वा, सांसद सीपी जोशी, विधायक चन्द्रभानसिंह आक्या, विक्रमादित्य सिंह जुदेव, संस्थान के अध्यक्ष तखतसिंह सोलंकी, शक्तिसिंह मुरलिया आदि ने संबोधित किया। मंत्री प्रतापसिंह ने कहा कि सत्ता और नेता बदलते रहते हैं, उनके अनुसार इतिहास नहीं बदला जा सकता। गौरवमयी इतिहास को दलगत राजनीति से ऊपर रखा जाना चाहिए। उन्होंने महाराणा प्रताप एवं अकबर के बीच के संघर्ष को हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष न बताते हुए स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिए साम्राज्यवादी ताकतों से संघर्ष बताया। विश्वराजसिंह मेवाड़ ने कहा कि इतिहास हमें अनुभव के आधार पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। गोपालसिंह ईड़वा ने राजनीतिक जागृति को जरूरी बताया। समारोह में मॉरीशस का प्रतिनिधिमंडल भी शामिल हुआ। एक समाचार पत्र के अनुसार मॉरीशस की जनसंख्या में 12 प्रतिशत राजपूत हैं जो अधिकांश मेवाड़ से गए हुए हैं और मॉरीशस को दुनियां का दूसरा भारत कहा जाता है। समारोह में संस्थान की स्मारिका का विमोचन किया गया एवं विभिन्न क्षेत्रों की 69 प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। वर्तमान सांसद व विधायक ने दुर्ग में कराए विकास कार्यों की जानकारी दी।

प्रतिनिधित्व को तरसा गुजरात का राजपूत

देश में सत्रहवीं लोकसभा के लिए चुनाव हो रहे हैं। गुजरात में दोनों राजनीतिक दलों ने सभी 28 लोकसभा सीटों पर अपने प्रत्याशियों की घोषणा कर दी है। भाजपा ने पिछली बार की ही तरह इस बार भी एक भी टिकट नहीं दी है। यह वह भाजपा है जिसकी विचारधारा को गुजरात में जनसंघ के कर्ता धर्ता के रूप में हरिसिंह गढुला पूरे गुजरात में प्रसारित करने के लिए हर बार नए क्षेत्र से चुनाव लड़ा करते थे। यह वही भाजपा है जिसे गुजरात में खड़ा करने के लिए शंकरसिंह वाघेला जैसे लोगों ने अपना शत प्रतिशत दिया। यह वही भाजपा है जिसके प्रदेश अध्यक्ष कई बार राजपूत रहे। यह वही भाजपा है जिस पुराने चुनावों को छोड़े तो भी 2004 में दो राजपूतों को टिकट दिया और दोनों ही जीते। 2009 में भी दो राजपूतों को टिकट दिया एवं दोनों ही जीते। लेकिन 2014 में भावनगर से लगातार जीतने वाले राजेन्द्रसिंह राणा का टिकट काट दिया गया। साबरकांठा से 2009 में जीते महेन्द्रसिंह चौहान का भी टिकट काटा गया। 2004 में बनासकांठा से हरिसिंह प्रतापसिंह चावड़ा जीते लेकिन इन्हें भी नकारा गया और परिणाम स्वरूप 2014 के चुनावों के बाद अस्तित्व में आई सोलहवीं लोकसभा में गुजरात का एक भी राजपूत नहीं पहुंचा।

भाजपा ने टिकटें नहीं दी तो कांग्रेस भी पीछे कैसे रहती। 2004 में कांग्रेस ने कपड़वंज से शंकरसिंह वाघेला व कच्छ से शैलेन्द्र सिंह को टिकट मिला लेकिन शंकरसिंह ही जीत पाए। 2009 में भावनगर से महावीरसिंह व पंचमहल से शंकरसिंह को टिकट दिया लेकिन वे भी हार गए। 2014 में भाजपा ने जहां नितांत उपेक्षा की वहीं कांग्रेस ने साबरकांठा से शंकरसिंह को टिकट दिया लेकिन वे भी हार गए। इस बार भाजपा ने फिर उपेक्षा की है वहीं कांग्रेस ने भाजपा की परंपरागत सीट गांधीनगर से अमित शाह के सामने सी.जे. चावड़ा को उम्मीदवार बनाया है। इस प्रकार दोनों ही पार्टियां प्रदेश की 7 से 10 प्रतिशत आबादी के रूप में मौजूद राजपूत जाति का लोकसभा में शून्य प्रतिनिधित्व करने के लिए कटिबद्ध सी लगती हैं। यह स्थिति शेष सभी जगह के लिए खतरे की घंटी है। रणनीतिक व राजनीतिक समझ के साथ मतदान नहीं करने के अभाव में राजनीतिक दल महत्व नहीं देते हैं। किसी भी प्रकार की लहर के प्रभाव में आकर अपने अस्तित्व की चिंता किए बिना किसी के साथ होने का प्रभाव है कि सामने वाला हमारा महत्व नहीं समझता है और जब एक पक्ष महत्व देना कम करता है तो दूसरा भी ऐसा ही करता है। यदि पहली बार टिकट कटने पर प्रभावी प्रतिक्रिया होती और हमारी टिकट काटकर लाए गए प्रत्याशी के खिलाफ एकतरफा मतदान होता तो शायद पार्टियां विचार करती। इसलिए यह पूरे समाज के लिए सीख है कि बिना किसी लहर से प्रभावित हुए समाज के अस्तित्व को राजनीति में स्थापित करने के लिए रणनीतिक मतदान करें।

श्री प्रताप फाउण्डेशन
ए-8, तारा नगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302012

चुनाव में हमारा दायित्व

नई लोकसभा के गठन हेतु देश में चुनावी चौसर बिछ चुकी है। सभी राजनीतिक दल सिद्धान्तों, भाषा की शालीनता और आदर्श मर्यादाओं को लांघकर जीत के लिए ताल ठोक रहे हैं। भारत जैसे संवेदनाओं और परम्पराओं में जीने वाले देश में यह प्रतिकूल वातावरण बन चुका है, पर जैसी भी स्थिति है हमें मतदान तो करना है। प्रथम आम चुनाव में विधानसभा की 160 सीटें थी जिनमें से 57 सीटों पर हमारे समाज के विधायक चुने गए थे। धीरे-धीरे यह संख्या घटकर ग्यारहवीं विधानसभा में 200 में से मात्र 17 रह गई। सामाजिक महत्त्व घटता देखकर जागरुक सामाजिक लोगों और राजनीतिक नेताओं की पीड़ा ने प्रताप फाउण्डेशन के रूप में कार्य प्रारम्भ किया। कुछ राजनीतिक जागृति पनपी तथा अगले चुनाव में विधायकों की संख्या बढ़कर 24 पहुंची। समाज में मतदान बढ़ाने और इक तरफा मतदान करने की प्रवृत्ति आज भी है लेकिन कुछ अन्य कारणों से इसमें कुछ क्षरण हुआ है। हर राजनीतिक दल जातिगत राजनीति करने के विरुद्ध लम्बे भाषण देते हैं, पर वस्तु स्थिति यह है कि सभी दल टिकट भी जातिगत आधार पर ही देते हैं। जो समाज अपनी सामाजिक एकता का प्रदर्शन करता है, उसे ज्यादा टिकट मिलती है, उसकी पूछ होती है। वर्तमान चुनाव एक अवसर है कि हम हमारी सामाजिक एकता व शक्ति का प्रदर्शन करें। दोनों दलों ने इस बार लोकसभा के लिए 3-3 प्रत्याशी हमारे समाज के उतारे हैं। कांग्रेस ने अलवर, चित्तौड़गढ़ और बाड़मेर से तथा भाजपा ने जयपुर ग्रामीण, राजसमंद व जोधपुर से। अच्छी बात यह है कि इन सभी के सामने सामाजिक प्रत्याशी नहीं है। इसलिए हम हमारी सक्रियता से इस बार हमारे समाज के 6 सांसद विजयी बनाकर हमारी शक्ति का प्रदर्शन कर सकते हैं।

कौन किस दल का है यह न सोचें, कौन योग्य या अयोग्य है यह बात अभी सामने न आए, किस के प्रति लगाव है, किसके प्रति नहीं, ऐसा विचार ही न करें, किसी के प्रति व्यक्तिगत पसंद या नापसंदगी का सवाल न उठाएं, मेरे विचार में कोई अच्छा है या बुरा है, इसके लिए भी यह अवसर विचार करने का नहीं है। हमें सभी 6 प्रत्याशियों को जिताना है, इस संकल्प के साथ सहयोग में जुट जाएं। शत-प्रतिशत और इकतरफा मतदान करवाने में पूरी सक्रियता से जुटें और इस सामाजिक दायित्व को निभावें।

ईश्वर हम सबको सद्प्रेरणा दें।

विनीत : महावीरसिंह सरवड़ी

संघ लोकसेवा आयोग का परिणाम

विगत दिनों संघ लोक सेवा आयोग द्वारा भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) का अंतिम परिणाम जारी हुआ। राजस्थान से हमारे समाज के दिलीप प्रताप सिंह की 72वीं रैंक आई। ये वर्तमान में बीजेएस कॉलोनी जोधपुर में निवासरत हैं। तीसरे प्रयास में चयनित हुए दिलीप मूलतः जयपुर जिले के लुणियावास गांव के रहने वाले हैं। इसके अलावा पाली जिले के मणिहारी गांव में जन्मी एवं रसीदपुरा (नागौर) की बहू उर्वशी कंवर का भी 341वीं रैंक पर चयन हुआ है। यह चयन गौरव की अनुभूति करवाता है। चयनित होनहारों को बधाई लेकिन अनुपातिक रूप से इस प्रतिष्ठित सेवा में इतनी कम भागीदारी हमारे लिए विचारणीय विषय है।

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

विश्वास आज का सबसे बड़ा धन है। यूं तो विश्वास सदैव ही सबसे बड़ा धन रहा है लेकिन जिस समय जिस चीज का अकाल हो उस समय उस चीज की कीमत बहुत अधिक बढ़ जाती है। आज के समय ऐसा ही है और इसीलिए विश्वास करना, सामने वाले का विश्वास पाना अपने आप में बड़ा धन माना जाता है। विश्वास के बदले धोखे के बहुतायत उदाहरणों के बीच विश्वास के बदले विश्वास के उदाहरण गणनीय हो जाते हैं, बताने लायक हो जाते हैं, प्रचारित भी अधिक होते हैं क्यों जब सामान्य व्यवहार धोखे का हो गया हो तो विश्वास बरकरार रखना असामान्य घटना हो जाती है। ऐसे में धोखे के बदले अति विश्वास देना अपने आप में अति आसामान्य बात होती है और ऐसा असामान्य व्यवहार अति असाधारण पुरुष ही कर पाते हैं। ऐसे पुरुष ही महापुरुषों की श्रेणी में आते हैं और जन सामान्य के लिए प्रेरणा पुंज बनते हैं। पूज्य तनसिंह जी ऐसे ही प्रेरणा पुंज थे। जीवन में अनेकों बार उन्होंने धोखा खाकर भी विश्वास कायम रखा या यूं कहें कि सामने वाले के विश्वास को कायम रखने के लिए जान बूझकर धोखा खाया। उनके जीवन में ऐसी अनेक घटनाओं के बारे में प्रायः सुनते रहते हैं जो इस बात को पुष्ट करती है। लेकिन उनका यह सहज स्वभाव था। वे स्वाभाविक रूप से ही ऐसे थे इसकी पुष्टि उनके बचपन की यह घटना करती है। चौपासनी में अध्ययन कर रहे थे उस समय छात्रावास के दो सहपाठियों में किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया। बात बढ़ी तो एक छात्र ने दूसरे के ऊपर छूरी से वार कर दिया। छूरी का घाव तो गहरा नहीं था लेकिन इस बात को लेकर छात्रावास के छात्रों के दो दल बन गए। घाव खाने वाले का दल मजबूत था। जिस छूरी से वार किया गया था वह छूरी पूज्य श्री के एक मित्र की थी और वैसी ही छूरी तनसिंह जी के पास भी थी। एक दिन वे दोनों साथ जा रहे थे तो घाव खाने वाले सहपाठी के दल ने उनको घेर लिया और छूरी वाली घटना के बारे में पूछने लगे। पूज्य श्री घटना से अनजान थे जबकि मित्र सब जानता था। लेकिन मित्र ने कह दिया कि मैं कुछ नहीं जानता और यह सब जानता है। वे पूज्य श्री की ओर मुड़े। उन्होंने नकारा नहीं बल्कि सहज भाव से स्वीकार कर लिया कि मेरा यह मित्र कुछ नहीं जानता, इसे छोड़ देवें। वे उनके साथ मारपीट करते उससे पहले ही एक अध्यापक जी उधर आ गए और बात आई-गई हो गई। लेकिन इसके बाद भी तीन चार बार उन्होंने उन पर वार करने की कोशिश की और वे किसी कृपा से बचते रहे। लेकिन मित्र के व्यवहार की उन्होंने शिकायत नहीं की और ना ही किसी को बताया कि वह झूठ बोल रहा है। ऐसा था पूज्य तनसिंह जी का बचपन का व्यवहार। पूरे जीवन उनका यह व्यवहार बना रहा। जहर खाकर भी वे अमृत पिलाने को सदैव तत्पर रहे।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे....

– अभयसिंह रोडला

(4) CFA (Chartered Financial Analyst) : चार्टर्ड फाइनेन्शियल एनालिस्ट अथवा प्रशिक्षित वित्तीय विश्लेषक एक प्रतिष्ठित कैरियर है। अर्थव्यवस्था के विस्तार तथा अन्तर्राष्ट्रीयकरण की बढ़ती गति ने दक्ष वित्तीय विश्लेषकों की मांग में अत्यधिक वृद्धि की है। चार्टर्ड फाइनेन्शियल एनालिस्ट का कोर्स उपलब्ध करवाने वाली संस्था CFA Institute है, जिसका मुख्यालय संयुक्त राज्य अमेरिका के वर्जिनिया राज्य में स्थित है। CFA कोर्स के तीन स्तर हैं जो इस प्रकार है :

(i) लेवल - I : CFA कोर्स में अभ्यर्थी को सर्वप्रथम लेवल- I हेतु स्वयं को पंजीकृत (Register) करना होता है। लेवल - I परीक्षा प्रतिवर्ष जून तथा दिसम्बर माह में आयोजित होती है। इसमें पंजीकृत होने के लिए निम्नलिखित अर्हताएं हैं :

- अभ्यर्थी ने स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण कर रखी हो अथवा स्नातक अंतिम वर्ष में हो।
- लेवल - I में रजिस्ट्रेशन करने वाले अभ्यर्थी के पास वैध अन्तर्राष्ट्रीय पासपोर्ट होना आवश्यक है।

लेवल - I परीक्षा के प्रश्न पत्र में केवल बहु वैकल्पिक प्रश्न पूछे जाते हैं।

(ii) लेवल II : इस परीक्षा में बैठने के लिए लेवल - I परीक्षा उत्तीर्ण करना आवश्यक है। इसमें भी बहु वैकल्पिक प्रश्न पूछे जाते हैं। यह परीक्षा प्रतिवर्ष जून माह में आयोजित होती है।

(iii) लेवल - III : लेवल - II परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात यह परीक्षा दी जा सकती है। यह भी प्रतिवर्ष जून माह में आयोजित होती है। इसमें बहु वैकल्पिक तथा विवरणात्मक दोनों प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं।

उपरोक्त तीनों परीक्षाओं का माध्यम अनिवार्य रूप से अंग्रेजी होता है। यह तीनों परीक्षाएं उत्तीर्ण करने के साथ ही चार्टर्ड फाइनेन्शियल एनालिस्ट बनने हेतु चार वर्ष का कार्यानुभव भी आवश्यक है। यह कार्यानुभव इन परीक्षाओं से पूर्व, इनके दौरान अथवा इनके पश्चात् प्राप्त किया जा सकता है।

CFA Institute तथा CFA परीक्षा के बारे में और अधिक विस्तृत जानकारी www.cfainstitute.org पर प्राप्त की जा सकती है।

क्रमशः

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

सदर-ए-रियासत

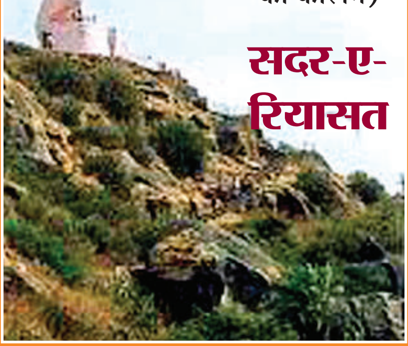

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

भारत वर्ष का मुकुट कश्मीर, जम्मू, श्रीनगर घाटी, गिलगित, बालटिस्तान व लद्दाख को मिलाकर जम्मू एवं कश्मीर कहलाता है। जब यह राज्य उन्नीसवीं सदी के मध्यार्थ में पंजाब के सिक्ख राजा रणजीतसिंह के राज्य का हिस्सा था तब जयपुर रियासत के नरैना (दूद के पास) से कच्छावा खंगारोत उनकी सेना का हिस्सा बनने पंजाब गए। उन्हीं में एक शूरवीर कच्छावा गुलाबसिंह को उनकी बहादुरी से प्रभावित होकर 1846 में राजा रणजीतसिंह ने पूर्ण रूप से स्वतंत्र जम्मू और कश्मीर का महाराजा घोषित कर दिया। ये अब डोगरा सरदार कहलाने लगे। गुलाबसिंह के जनरल जोरावर सिंह ने अपनी अदम्य बहादुरी से कश्मीर की सीमाएं सुदृढ़ की। रणवीर सिंह, प्रताप सिंह और आजादी के समय महाराजा हरीसिंह यहां के शासक रहे। इन्हीं महाराजा हरीसिंह के पुत्र है महाराजा डॉ. कर्णसिंह। इनका जन्म 9 मार्च 1931 को फ्रांस के केन्स शहर में हुआ। आप दून स्कूल देहरादून के विद्यार्थी रहे। राजनीति शास्त्र में एम.ए. एवं पी.एच.डी. की, आप कला एवं संस्कृति के बड़े संवाहक हैं। कवि, लेखक, पेन्टर, नृत्य, ड्रामा, संगीत साजों को बनाने वाले एवं गायक, अनेक भाषाओं में ज्ञाता हैं। शास्त्रीय संगीत के आप बड़े जानकार हैं संस्कृत भाषा एवं अध्यात्म में आपकी विद्वता का कोई सानी नहीं। आपने श्रीनगर एवं जम्मू में विशाल पुस्तकालय एवं शानदार म्यूजियम बना रखे हैं।

माता वैष्णोदेवी का विश्व प्रसिद्ध मन्दिर आप की रिसायत का मन्दिर रहा है तथा आप वर्षों तक इस श्रेयान बोर्ड के अध्यक्ष रहे हैं। जम्मू का प्रसिद्ध श्री रघुनाथ मंदिर आपका व्यक्तिगत मंदिर है। पंडितों का प्रसिद्ध खीर भवानी मंदिर, श्रीनगर का शंकराचार्य मंदिर, गुलबर्ग की महारानी द्वारा बनाए गए शिव मंदिर सहित लगभग 100 मंदिरों की देखरेख कर रहे देवस्थानम बोर्ड के आप अध्यक्ष हैं। 1949 से जम्मू कश्मीर रियासत का भारत गणतंत्र में विलय हो गया। महाराजा हरीसिंह ने अपना पद त्याग दिया तब आपको केवल 18 वर्ष की आयु में रिजेन्ट (1949-52) नियुक्त किया गया। आप सदर-ए-रियासत (1952-65) रहे। 1965 से 1967 तक आप कश्मीर के राज्यपाल (गवर्नर) रहे। 1967 में भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने इन्हें अपने मंत्रिमंडल में पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन मंत्री बनाया। उस समय के वे सबसे युवा मंत्री थे। आप बाद में भी लोकसभा एवं राज्यसभा के सदस्य एवं केन्द्र में मंत्री रहे। आप अमेरिका में भारत के राजदूत भी रहे। आप जम्मू कश्मीर विश्वविद्यालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एवं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली के चांसलर रहे। भारत के राष्ट्रपति ने आपको पर्यटन, शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में विशेष योगदान देने के उपलक्ष्य पद्म विभूषण से सम्मानित किया। आप भारत के राष्ट्रपति के पद के लिए योग्य उम्मीदवार रहे पर चापलूस राजनीति में केवल राजघराने से ताल्लुक रखने के कारण आप का नाम पीछे रहता गया। प्रसिद्ध साहित्यकार एवं पत्रकार खुशवन्त सिंह ने आप को राष्ट्रपति पद का सबसे सुयोग्य प्रत्याशी मानकर एक लेख भी लिखा था। आपका विवाह नेपाल के राणा खानदान के शरद जंग बहादुर शमशेर राणा की राजकुमारी यशोराज्य लक्ष्मी से हुआ। बाड़मेर के पूर्व सांसद एवं जैसलमेर के महारावल रघुनाथसिंह आपके साढु थे। आपके पुत्र विख्यात पोलो खिलाड़ी तथा ग्वालियर के महाराजा माधवराज सिंधिया के दामाद विक्रमादित्य हैं जो अभी उधमपुर लोकसभा सीट से कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में केन्द्रीय मंत्री डॉ. जितेन्द्रसिंह के सामने चुनाव लड़ रहे हैं। दूसरे पुत्र अजातशत्रु जम्मू कश्मीर की राज्य सरकार में मंत्री रहे हैं तथा अभी भाजपा के नेता है। डॉ. कर्णसिंह भारत की सांसद के सबसे सम्मानित व विद्वान सदस्य माने जाते हैं।

नन्हीं प्रतिभा रूद्रदमन

मूल रूप से लाम्बिया (पाली) के निवासी सुरेन्द्रसिंह मेड़तिया एवं डॉ. कीर्ति शेखावत के पुत्र रूद्रदमन (उम्र 7 वर्ष) ने शतरंज के खेल में अनेक प्रतियोगिताओं में विजेता के पदक हासिल किए हैं। कक्षा तीन का छात्र रुद्रदमन अंतर्राष्ट्रीय शतरंज टूर्नामेंट में सबसे छोटे प्रतिभागी के रूप में पुरस्कृत हो चुका है। कई स्थानीय प्रतियोगिताओं में अंडर-7 वर्ग में विजयी हुआ है। 2018 की अंडर-7, राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिता में राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया है। 2 जुलाई में कलकत्ता में आयोजित होने वाली अंडर-7 प्रतियोगिता में फिर से राजस्थान का प्रतिनिधित्व करने जा रहा है। नन्हें रूद्रदमन को हम सबकी बधाई एवं शुभकामनाएं।

लाडनूं में पारिवारिक स्नेहमिलन

लाडनूं शहर में रहने वाले राजपूत परिवारों का एक पारिवारिक स्नेहमिलन 31 मार्च को लाडनूं में आयोजित हुआ जिसमें लाडनूं शहर व ढींगसरी, रताऊ, छापड़ा, दूकर, प्यांवा, कसूंबी, कोयल आदि गांवों के साथ-साथ नागौर व कुचामन से भी प्रतिनिधि शामिल हुए। स्नेलमिलन को संबोधित करते हुए केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने कहा कि हम सभी आज भयभीत हैं। नौकर-मालिक, पिता-पुत्र, धनवान-अमीर, गुरु-शिष्य आदि सभी के संबंधों में विश्वास का स्थान भय ने ले लिया है। मृत्यु के भय से पहले मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख आदि के जाने का भय सताता रहता है। इन सब भय का कारण हमारा अज्ञान है। अपने आपको न पहचानना है। संघ इसी अज्ञान को दूर करता है जिससे हम भय मुक्त जीवन जी सकें। पूर्व विधायक मनोहरसिंह लाडनूं की उपस्थिति में आयोजित कार्यक्रम को गोवर्धनसिंह डाबड़ी, नरपतसिंह गौड़, राजेन्द्रसिंह धोळ्या, जितेन्द्रसिंह सांवराद, हरिसिंह कोयल, गजेन्द्रसिंह ओडींट, प्रतापसिंह कोयल आदि ने संबोधित किया। संभाग प्रमुख शिंभूसिंह आसरवा ने सबका आभार व्यक्त किया। यज्ञ से प्रारम्भ हुआ कार्यक्रम स्नेहभोज के बाद पूर्ण हुआ।

द्रावणगिरी (कर्नाटक) में संघ की शाखा

जीवनयापना के साधन जुटाने जाने वाले राजस्थानी समाज बंधु लगातार संघ के संदेश के संवाहक बनते जा रहे है। सुरत, मुंबई, पूना, चेन्नई, हैदराबाद, कलकत्ता, दुबई, बेंगलोर आदि स्थानों पर इस प्रकार के प्रयास लगातार चल रहे हैं और हर प्रयास कुछ कदम आगे बढ़ा रहा है। ऐसे ही प्रयासों की कड़ी में कर्नाटक के द्रावणगिरी में विगत माह से संघ की शाखा लग रही है। जोधपुर जिले के सगरा निवासी भोमसिंह के प्रयासों से वहां संघ के दर्शन का बीज-रोपण हुआ है।

दवाड़ा में स्नेहमिलन

चांधन प्रांत की दवाड़ा व मूलाना शाखा के स्वयंसेवकों ने नवरात्रा स्थापना के दिन स्नेहमिलन का आयोजन किया। दवाड़ा गांव के उत्तर में नदी के किनारे स्थित सच्चियाय माता मंदिर में आयोजित स्नेहमिलन में दोनों शाखाओं ने सामूहिक शाखा लगाई एवं मंदिर परिसर की सफाई की। मंदिर में ज्योत की गई एवं सामूहिक प्रार्थना कर कर्तव्य पथ पर आरूढ़ रहने की शक्ति देने की प्रार्थना की गई।

शहीद जयसिंह भाटी का 23वां बलिदान दिवस मनाया

जैसलमेर के शहीद जयसिंह भाटी स्मृति संस्थान द्वारा शरीद जयसिंह भाटी का 23वां बलिदान दिवस 27 मार्च को मनाया गया। शहीद जयसिंह भाटी चौराहे पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि डी.आई.जी. बी.एस.एफ. राजेश कुमार ने राजस्थान को वीरों की धरती बताते हुए उनके बलिदान को युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बताया। विशिष्ट अतिथि एवं जैसलमेर पूर्व राजपरिवार के सदस्य चैतन्य राजसिंह, पूर्व विधायक सांगसिंह भाटी, पूर्व विधायक छोटुसिंह भाटी, पूर्व विधायक गोवर्धन कल्ला, यूआईटी के पूर्व चेयरमैन जितेन्द्रसिंह, नगर परिषद सभापति कविता भाटी आदि ने समारोह को संबोधित करते हुए जैसलमेर की भूमि को वीर प्रसूता बताया एवं गौरवपूर्ण इतिहास को नमन किया। सीमावर्ती क्षेत्र के नागरिक होने के नाते राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व के प्रति जागरूक रहने एवं सेना के साथ मिलकर काम करने की भी बात कही गई। कार्यक्रम में देशभक्ति गीत एवं कविताएं भी प्रस्तुत की गई।

News Brief

खंगार पीर मंदिर में रात्रि जागरण

सोढा राजपूत परिवार में जन्म लेकर चमत्कारिक पीर के रूप में पूजित खंगार पीर के मंदिर में मूलाना गांव वासियों ने चैत्र सुदी दूज (द्वितीया नवरात्रि) को भव्य रात्रि जागरण का आयोजन किया जिसमें ग्रामवासियों के साथ-साथ आसपास के भजन गायक भी उपस्थित हुए। रात्रि जागरण के उपरांत दूसरे दिन प्रातः से प्रतिवर्ष लगने वाले दो दिवसीय मेले का आगज हुआ।

राजपूत सभा जोबनेर की बैठक

राजपूत सभा जोबनेर की बैठक 20 मार्च को संग्रामसिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में लड़की की शादी में कन्यादान के रूप में अधिकतम 101 रुपए एवं लड़के के विवाह में निकासी पर अधिकत 51 रुपए ही देने पर सहमति बनी। सामाजिक एवं पारिवारिक समारोहों हेतु कुर्सियां, टेबल, प्लेट, दरियां आदि खरीदने का निर्णय लिया गया एवं इस हेतु बकाया सहयोग राशि तुरन्त जमा करवाने का निर्देश दिया गया। सामाजिक रूढ़ियों बाबत पूर्व में लिए गए निर्णयों की समीक्षा की गई।

पूनम राठौड़ की पी.एच.डी.

गांव मुहाना जिला नागौर निवासी दातारसिंह की पुत्री पूनम कंवर राठौड़ ने राजस्थान विश्वविद्यालय से 'एनालिसिस ऑफ फिसकल मैनेजमेंट इन राजस्थान' विषय पर शोध पूर्ण कर पी.एच.डी. की डिग्री हासिल की है।

मूर्ति बनवाने पर सम्मान

पाली शहर में महाराणा प्रताप की भव्य प्रतिमा का निर्माण करवाने में अग्रणी भूमिका निभाने वाले एडवोकेट शैतानसिंह सोनिगरा व पार्षद सवाई सिंह जैतावत का 7 अप्रेल को राजपूत छात्रावास पाली में जय भवानी राजपूत संस्थान पाली द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर पाली शहर के गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे।

राजपूत प्रतिनिधियों की बैठक

महाराजा गजसिंह राजपूत विश्राम सभा भवन विकास एवं कल्याण संस्थान के तत्वावधान में जोधपुर के लूणी, बिलाड़ा व पाली के रोहिट, सोजत क्षेत्र के 81 गांवों के राजपूतों के प्रतिनिधियों की बैठक में मृत्युपरांत शोक के 12 दिनों में किसी भी नशीले पदार्थ की मनुहार न करने का निर्णय लिया गया। साथ ही विवाह व अन्य समारोहों में शराब पर पूर्ण प्रतिबंध, मृत्यु भोज में मिष्ठान के रूप में केवल लापसी बनाने, बरातियों की संख्या कम करने, जुआरी का दस्तूर न करने, पड़ले में 11 थाल ही रखने, समटूणी (दहेज) का दिखावा न करने संबंधी निर्णय लिए गए। इन निर्णयों की पालनार्थ प्रत्येक गांव में पांच सदस्यीय कमेटी भी बनाई गई।

उच्च प्रशिक्षण शिविर हेतु सम्पर्क

बांसवाड़ा में आयोज्य उच्च प्रशिक्षण शिविर की व्यवस्था में सहयोग बाबत मेवाड़ वागड़ क्षेत्र के केन्द्रीय कार्यकारी गंगासिंह साजियाली के मार्गदर्शन में संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला, प्रांत प्रमुख हणवंतसिंह सज्जनसिंह का गडा, दिग्विजय सिंह लांबापारड़ा, लाखनसिंह लांबापारड़ा आदि की टीम गनोड़ा एवं आसपास के क्षेत्र में सम्पर्क कर रही है। व्यवस्था हेतु दायित्व बांटे गए हैं। सभी समाजबंधुओं द्वारा उत्साहपूर्वक किया जा रहा सहयोग प्रेरणादायी है।

संपादकीय Collom

किसान, कृषि और राजनीति

लोकतंत्र में लोक का समर्थन ही तंत्र को हासिल करने का माध्यम होता है। लोक का समर्थन हासिल करने के लिए राजनीतिक लोग बहुसंख्यक वर्गों को आकर्षित करने का प्रयास करते हैं या ऐसे वर्गों को आकर्षित करते हैं जिनकी संख्या कम होने के बावजूद एक मुश्त समर्थन देते हैं। इसी आकर्षण की प्रक्रिया के तहत भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिज्ञों के लिए किसान, दलित, मुसलमान आदि आकर्षण के केन्द्र बने और लगातार बने हुए हैं। भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां हर जाति, वर्ग, पंथ एवं प्रदेश के लोग किसी न किसी रूप से कृषि से जुड़े रहे इसलिए किसान एवं कृषि सदैव यहां की राजनीति की धूरी रहे। हर राजनीतिक दल किसानों का हितैषी दिखने का प्रयास करता रहा है। इसके तहत विभिन्न प्रकार की सब्सिडी, सस्ते ऋण एवं ऋणमाफी आदि लुभावने वादे किए गए, योजनाएं भी बनाई गई और लगातार पूरी राजनीति इसी दिशा में चल रही है। सीधे नगद लाभ देने की लुभावनी योजनाएं भी बनी, वहीं ठोस प्रगति के लिए भी कार्यक्रम बनाए गए। आजादी के समय देश खाद्यान्न संकट से जूझ रहा था इसलिए उत्पादन बढ़ाना आवश्यक था और इसी के तहत कृषि क्षेत्र में खाद्यान्न का उत्पादन बढ़ाने के विभिन्न कार्यक्रम लाए गए और इसके लिए प्रोत्साहन हेतु विभिन्न योजनाएं बनी। उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ खाद्यान्न की कीमत को गरीब की पहुंच में बनाए रखने के प्रयास में कृषि उपज के मूल्यों को नियंत्रण में रखने की विशेष योजनाएं बनी और उन्हीं योजनाओं की आड़ में किसान को उसकी उपज का वाजिब मूल्य मिलना बंद हो गया। सरकारों ने किसान के इस घाटे को सब्सिडी, समर्थन मूल्य आदि उपायों द्वारा पाटने की कोशिश की लेकिन वे किसान एवं कृषि की बदत्तर होती स्थिति को नहीं संभाल सकीं और कृषि निरन्तर घाटे का व्यवसाय बनती रही। लेकिन सरकारों एवं राजनेताओं के लिए वोट बैंक बन चुके किसान वर्ग को राजी रखना जरूरी था इसलिए किसान के कल्याण के लिए घड़ियाली आंसू एवं कुछ नकद लाभ देने की परम्परा चलती रही और निरन्तर चल रही है। लेकिन क्या इससे किसान की स्थिति में सुधार संभव है? जरा विचार करें कि आजादी के बाद पनपी अर्थव्यवस्था में बार-बार कृषि कल्याण का नारा दिया गया लेकिन कृषि लगातार अलाभकारी बनती रही। हम यदि अपने दैनिक जीवन व्यवहार का विश्लेषण करें तो पाएंगे कि कृषि उत्पादों पर हमारी आय का बहुत कम प्रतिशत खर्च हो रहा है।

एक सामान्य मध्यम वर्गीय परिवार में सभी घर वालों के मोबाईल खर्च का मोबाइल सेट की कीमत सहित आकलन करें तो यह लगभग उस खर्च के बराबर होता है जिसमें पूरे परिवार के लिए अनाज खरीदा जाता है। आज एक सामान्य मध्यम वर्गीय परिवार का रसोई खर्च उसके द्वारा किए जाने वाले कुल खर्च में अन्य खर्चों की अपेक्षा बहुत कम होता है। जरा विचार करें कि आजादी के बाद परिवार में उपयोग होने वाली विभिन्न वस्तुओं के मूल्यों की वृद्धि और रसोई में उपयोग होने वाले कृषि संबंधी उत्पादों के मूल्यों की वृद्धि के अनुपात में कितना अधिक असंतुलन है? अनाज के मूल्य और कपड़ों के मूल्यों में हुई वृद्धि की तुलना कीजिए, बिजली, पानी आदि सुविधाओं पर होने वाले खर्च एवं दूध, दही, घी आदि पर होने वाले खर्च की तुलना कीजिए। यदि हम गहराई से विचार करेंगे तो पाएंगे कि कृषि एवं उससे संबंधित क्षेत्रों के उत्पादों की मूल्य वृद्धि व्यक्ति की आय में हुई वृद्धि के अनुपात में बहुत कम है और इसी का परिणाम है कि खाना व्यक्ति के जीवन में अति महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हुए भी उसकी खर्च करने की प्राथमिकताओं में नीचे उतरता गया और परिणाम स्वरूप कृषि और किसान का महत्त्व घटता गया। लेकिन प्रश्न आज भी देश के भाग्य विधाताओं के समक्ष बना हुआ है कि इस महत्त्व को कैसे बढ़ाया जाए। लेकिन क्या वे इस प्रश्न के प्रति इसके महत्व के अनुपात में गंभीर भी हैं? यदि गंभीर होते तो ऋण माफी जैसी अकर्मण्यता पैदा करने वाली घोषणाएं नहीं होती। किसान को अन्नदाता कहा जाता है और भारतीय संस्कृति में सदैव उसे अन्नदाता बताकर सम्मान दिया गया लेकिन वर्तमान के भाग्य विधाता तो उसे कुछ नगद लुटाकर मेहरबानी कर-के उसके वोट लेने तक सीमित रहना चाहते हैं और उसे स्वयं पर निर्भर लाचार बनाये रखना चाहते हैं। किसान एवं कृषि कल्याण का एक मात्र उपाय किसान को उसकी उपज का उचित मूल्य मिलना है। किसी वस्तु का मूल्य ही उसकी कीमत करवाता है। किसान को अपनी उपज को ओने-पौने दामों में बेचने को मजबूर कर हम उसकी कीमत नहीं बढ़ा सकते इसलिए यदि हमारे भाग्य विधाता किसान और कृषि को लेकर वास्तव में चिंतित हैं तो एक मात्र उपाय उसकी उपज का मूल्य बढ़ाना है। ऐसे में प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि हर भूखे को भोजन उपलब्ध करवाने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए खाद्यान्नों की कीमत उनकी पहुंच तक बनाए रखने की नीति का क्या होगा? तो यह प्रश्न अन्य प्रकार का प्रश्न है और आवश्यक नीतिगत विचार विमर्श द्वारा या सार्वजनिक वितरण की प्रभावी व्यवस्था द्वारा इसका उपाय ढूंढा जा सकता है लेकिन एक की भूख मिटाने के लिए दूसरे को भूख की ओर प्रवाहित करना तो किसी भी स्थिति में उचित नहीं कहा जा सकता। लेकिन यह देश का दुर्भाग्य रहा है कि हर समस्या के समाधान ने एक नई समस्या को जन्म दिया है क्योंकि इस व्यवस्था में समस्या का हल ढूंढ़ने वाले अल्पकाल के लिए समस्या का हल ढूंढ़ने लायक बनते हैं और समस्या को आगे वाले के लिए सरका कर चलते बनते हैं। ऐसे में हर समस्या का हल एक नई समस्या लेकर आता है। इसी प्रवृत्ति का शिकार है किसान और कृषि।

इसीलिए आजादी के बाद से अब तक किसान और कृषि राजनीति का केन्द्र बिन्दु बने रहते हुए भी देश के सामान्य जनजीवन के केन्द्र से दूर होते गए और परिणामतः विकास के अनेक खोखले दावों के बीच उपेक्षा का दंश झेलते गए। इसलिए आवश्यकता है कि योजनाएं पंचवर्षीय नहीं बल्कि पंच शताब्दियों की बनें और जो ऐसा करेगा उसके लिए यह चिंता का विषय नहीं रहेगा कि अगले पांच वर्ष बाद कोई और आ जाएगा लेकिन अफसोस कि ऐसा सोचने वाला चरित्र इस राष्ट्र की राजनीतिक फिजां से किनारे हो गया है और ऐसे में कोई शताब्दियों की योजना बने जो उस चरित्र को उभारने का काम करे, उसके निर्माण का काम करे। श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसी ही योजना है।

खरी-खरी...

अहसानमंद राष्ट्र

अभी चुनाव चल रहे हैं। तरह-तरह के बयान महान लोकतंत्र के महान लोगों के आ रहे हैं। यह महान राष्ट्र अगले पांच वर्षों के लिए अपने भाग्य विधाता चुन रहा है जो अगले पांच वर्ष के लिए अपनी महानता की इस राष्ट्र पर छाप छोड़ेंगे और फिर उनके अनुयायी अगले चुनावों में फिर इस राष्ट्र को अपने उन महान नेताओं का अहसान मानकर कृतज्ञतापूर्वक वोट देने का आग्रह करेंगे। जैसा इन चुनावों में कर रहे हैं और विगत के चुनावों में करते आए है। कोई कहता है कि राष्ट्र को एक परिवार के प्रति अहसानमंद होना चाहिए जिसने इतने-इतने प्रधानमंत्री इस राष्ट्र को दिए। जरा विचार करें कि यदि वह परिवार ऐसा नहीं करता तो इस बेचारे राष्ट्र का क्या होता? कोई कहता है कि इस राष्ट्र को एक व्यक्ति का अहसानमंद होना चाहिए जो अठारह घंटे जागकर इसके लिए काम करता है। एक भी छुट्टी नहीं लेता। अब राष्ट्र के सामने यह दुविधा है कि वह इनका अहसान माने कि उनका? वह इनका ऋण चुकाए कि उनका? वह इनके प्रति कृतज्ञ हो कि उनके? इसी दुविधा में राष्ट्र तो कभी इनमें विश्वास जता देता है तो कभी उनमें और वे है कि फिर से इसे अहसानमंद बनाकर विदा हो जाते हैं और राष्ट्र पर कृतज्ञता का भार चढ़ाते जाते हैं। राष्ट्र उनके द्वारा थोपी गई कृतज्ञता में इतना दबा रहता है कि यह भी नहीं बता पाता कि यह राष्ट्र अहसान करने वाले उन लोगों से पहले भी था और बाद में भी रहेगा। यह राष्ट्र ऐसे कई अहसान करने वालों को अपनी रज में मिलाए बैठा है। लेकिन वह यह कभी नहीं कहता कि अहसान जताने वालों का उसके बिना कोई अस्तित्व नहीं है। उसने अपनी आवश्यकता को अपने दम पर अनेक बार पूरा किया है और अहसान जताने वालों के दर्प को चकनाचूर करने के लिए किसी गरीब की झोंपड़ी से चन्द्रगुप्त तैयार किया है। उनके दर्प को दूर करने के लिए साधन विहीन बप्पा रावल को सम्राट बनाया है। ऐसे आत्म मुग्ध लोगों की आत्म मुग्धता को दूर करने के लिए दुर्गादास जैसे साधन विहीन लोगों के सामने साम्राज्यों को झुकाया है। लेकिन यह राष्ट्र भारत राष्ट्र है। भारतीयता इसके रोम-रोम में समायी है इसलिए यह एक सीमा तक राष्ट्र पर अहसान करने का दर्प पालने वाले लोगों को भी सहन करता है। सहनशीलता एवं क्षमाशीलता इसके रोम-रोम में समाई है इसलिए यह महाभारत जैसे लोमहर्षक युद्ध से पहले लड्डू के बहाने जहर देने को भी स्वीकार करता है, लाक्षागृह में जलाने को भी स्वीकार करता है, साम्राज्य में बदले बीहड़ वन क्षेत्र को स्वीकार कर इन्द्रप्रस्थ की नींव रखता है, द्रोपदी जैसी कुल वधु का भी अपमान सहन करता है, लेकिन जब यह राष्ट्र अन्याय और अधर्म के नाश को तत्पर होता है तो भीष्म जैसे महात्मा को भी माफ नहीं करता। इसलिए राष्ट्र के ही अंश के रूप में अपने अस्तित्व को पाने वाले लोग जब अपने क्षणिक अस्तित्व के दर्प में अपने आपको राष्ट्र से बड़ा मानने लगते हैं तो समझ लेना चाहिए कि यह सब राष्ट्र की सहनशक्ति की सीमाओं को लांघने लगे हैं। ऐसे में यदि हम यह मानते हैं कि हम इस राष्ट्र के सपूत हैं तो इन कपूतों के प्रति किसी भी प्रकार की दया से परहेज करना चाहिए। क्योंकि महापुरुष कहते हैं कि पिता के विरुद्ध किए गए किसी अपराध के लिए पिता किसी को माफ कर सकता है लेकिन पुत्र को तो अपने पिता के प्रति किए गए अपराध को कभी नहीं भूलना चाहिए। यदि हम अपने आपको इस राष्ट्र की सपूत संतान मानते हैं तो हमें ऐसे लोगों की पहचान करनी चाहिए जो अपने आपको इस महान राष्ट्र से ऊंचा मानते हैं या अपने नेताओं को इस राष्ट्र से ऊपर घोषित करते हैं। *(शेष पृष्ठ 7 पर)*

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	उ.प्र.शि.	18.05.2019 से 28.05.2019 तक	**लिटिल एंजल्स सीनियर सैकण्डरी स्कूल। कल्याणनगर, गनोड़ा (लांबापारड़ा) जिला-बांसवाड़ा।** शिविर स्थल उदयपुर रतलाम मार्ग पर उदयपुर से 125 किमी व रतलाम से 120 किमी दूर है। बांसवाड़ा से 35 किमी दूर है। गनोड़ा (लांबापारड़ा) के लिए जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, अहमदाबाद से सीधी बस सेवा उपलब्ध है। रेल सेवा के लिए उदयपुर या रतलाम रेलवे स्टेशन उतरें, वहां से बसें उपलब्ध हैं। शिविर स्थल गनोड़ा बस स्टैण्ड से 1 किमी दूर स्थित है। 18 मार्च को अपराह्न 12 बजे तक पहुंचना है। इस शिविर में 10वीं की परीक्षा दे चुके एवं 1 माप्रशि व 2 प्राप्रशि कर चुके शिविरार्थी ही शामिल हो सकेंगे। नीचे नोट में वर्णित गणवेश व सामग्री अनिवार्य रूप से लानी है। संघ साहित्य की झनकार, निर्देशिका एवं मेरी साधना पुस्तकें साथ लावें। **सम्पर्क सूत्र :** 94145-66796, 99835-65520, 95879-68610
2.	मा.प्र.शि. (बालिका)	31.05.2019 से 06.06.2019 तक	**जयमल कोट, पुष्कर (अजमेर)।** कम से कम 8वीं पास और पूर्व में शिविर की हुई बालिकाएं ही आ सकती हैं। गणवेश लेकर आएं।
3.	मिलन शिविर	07.06.2019 से 10.06.2019 तक	भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट द्वारा संचालित आलोक आश्रम, गेहूं रोड़, बाड़मेर। ● आमंत्रित स्वयंसेवक ही आ सकेंगे। ● आमंत्रित स्वयंसेवक पूरा शिविर न कर सकें तो कम-से-कम दो दिन के लिए आ सकते हैं।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

यूनानी आक्रमण और भारतीय प्रतिरोध

चौथी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यूनान के एक छोटे से राज्य मकदूनिया में एक महत्वकांक्षी युवक शासक बना। उस महत्वाकांक्षी युवक (सिकन्दर) की विश्व विजेता बनने की महत्वकांक्षा ने निरर्थक युद्धों की एक ऐसी श्रृंखला को जन्म दिया जिसका अंत उसकी मृत्यु के साथ हुआ। यूनान के छोटे-छोटे गणराज्यों को समाप्त करते हुए एशिया माइनर, मिश्र, सीरिया, फारस को विजयी करता हुआ वह भारत के पश्चिमोत्तर सीमा पर आ पहुंचा। भारत के पश्चिमोत्तर भाग में इस समय अनेक छोटे-बड़े जनपद, राजतंत्र एवं गणतंत्र विद्यमान थे। पारस्परिक द्वेष व अहं के कारण वे शत्रु का संगठित रूप से सामना नहीं कर सकते थे। सिकंदर ने भारत पर आक्रमण के लिए अपनी सेना को दो भागों में विभक्त किया। सेना का प्रथम भाग काबुल नदी के किनारे-किनारे खैबर दर्रे से भारत आया। इस सेना का सामना पुष्कलावही (पश्चिमी गांधार) के शासक अष्टक (हस्ति) ने किया। लम्बे संघर्ष में सिकन्दर की सेना को भारी क्षति पहुंचाते हुए अष्टक वीरगति को प्राप्त हुआ। सेना का दूसरा भाग, जिसका नेतृत्व सिकंदर कर रहा था स्वात नदी घाटी से होते हुए आगे बढ़ा जिसका प्रतिरोध अश्वकों ने किया। आयुधजीवी अश्वकों ने दासता के बंधन को अस्वीकारते हुए स्वतंत्रता के लिए कड़ा संघर्ष किया। अपने राजा की मृत्यु के बाद अश्वकों ने अपनी रानी के नेतृत्व में प्रतिशोध जारी रखा। उन्होंने सिकंदर की सेना को अपूरणीय क्षति पहुंचाई लेकिन सैन्य बल में सिकंदर की विशाल सेना के सामने संख्या में नगण्य अश्वकों को अंत में पराजय का सामना करना पड़ा। विजय के अहंकार में सिकंदर ने अश्वकों की राजधानी मसंग के सभी निवासियों को मौत के घाट उतार दिया। अब सिकंदर का सामना झेलम तथा चिनाव के मध्य स्थित कैकय प्रदेश के शासक पुरू (पौरस) से हुआ। राजा पुरु स्वतंत्रता का उपासक एक वीर स्वाभिमानी शासक था। सिकंदर और पुरु की सेनाएं झेलम नदी के पूर्वी और पश्चिमी तटों पर आ डटी। बरसात के कारण झेलम नदी अपने उफान पर थी, इस कारण दोनों सेनाएं तटों के किनारे बाढ़ का पानी उतरने की प्रतिक्षा कर रही थी। काफी दिनों तक सिकंदर के द्वारा नदी ना पार करने के कारण पुरु असावधान हो गया और इसका फायदा उठाते हुए एक बरसाती रात में सिकंदर ने अपनी सेना के एक भाग के साथ अपने सैन्य शिविर से काफी ऊपर नदी पार कर ली। पुरु को पता चलने पर उसने अपने पुत्र के नेतृत्व में 400 सैनिकों की एक टुकड़ी उधर भेजी। परन्तु उनके पहुंचने से पूर्व सिकंदर अपनी सेना के साथ नदी पार कर चुका था। पुरु के पुत्र के नेतृत्व में उस छोटी सी सैन्य टुकड़ी ने सिकंदर पर आक्रमण कर दिया। युद्ध में सिकंदर का प्रिय घोड़ा बुकापेला मारा गया पर वह स्वयं भी भाग्यवश बच गया। अपार शौर्य व रण चातुर्य का प्रदर्शन करती हुई वह छोटी सी टुकड़ी अपने सेनानायक राजकुमार के साथ वीरगति को प्राप्त हुई। तब तक पुरु भी अपनी सेना के साथ आ पहुंचा था। पुरु ने अत्यन्त कुशलता से सेना का संचालन करते हुए युनानियों में भय का माहौल बना दिया। भारतीयों की वीरता का आतंक युनानियों के हृदय में बैठ गया। सिकंदर की व्यूह रचना टूटने के कगार पर थी। पुरु की शक्ति विशेष कर उसके रथों व धनुर्धरों में थी। लेकिन लगातार होती बारिश के कारण भूमि रपटीली हो गई और रथों के बार-बार फिसलने के कारण उनका कौशल व्यर्थ जाने लगा। धनुर्धरों के धनुषों को भी भूमि पर रोक सकना असंभव सा हो गया था लेकिन पुरु अपने हाथी पर सवार अंत तक लड़ता रहा। पुरु के इस युद्ध में अनेकों घाव लगे अंत में पुरु की पराजय हुई और उसे बंदी बना लिया गया लेकिन पुरु की वीरता और उसके स्वाभिमान को देख सिकंदर ने मित्रतापूर्वक व्यवहार किया। लेकिन अब सिकंदर की सेना ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया था। छोटे-छोटे भारतीय राज्यों की सेनाओं के शौर्य व वीरता का उन पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वो मगध साम्राज्य की विशाल सेना से लड़ने का साहस खो बैठे। वापिस लौटते हुए सिकन्दर को अनेक गणराज्यों के प्रतिरोध का सामना करना पड़ा जिसमें मुख्य मल्लोई और क्षुद्रक गणराज्यों का प्रतिरोध था। इनसे संघर्ष में ही सिकंदर के वक्ष स्थल पर तीर लगा जो कालान्तर में उसकी मृत्यु का कारण बना।

हृदय (तीन)

श्री परमहंस आश्रम शक्तेषगढ़ की सायंकालीन सभा में भक्तों की जिज्ञासा पर कि, शरीर का वह कौन-सा अंग है जिसे हृदय कहते हैं, जिस हृदय में भगवान् का निवास होता है? - दिनांक 5 जून, सन् 2009 को पूज्य महाराजश्री का प्रवचन :

सृष्टि के समस्त क्रिया-कलाप हृदय कर रहा है। यहां धैर्य भी धारण कर रहा है।

किष्किन्धाकाण्ड का वर्णन है -

बहु छल बल सुग्रीव कर, हियं हारा भय मानि।
मारा बालि राम तब, हृदय माझ सर तानि।।
(मानस, 4/8)

हृदय से हार मान लेना, हृदय में बाण मारना जैसे प्रयोग भी रामचरितमानस में द्रष्टव्य हैं। संत-हृदय की तुलना निर्मल जल से की गई है-

संत हृदय जस निर्मल बारी। बांधे घाट मनोहर चारी।।
(मानस, 3/38/7)
सरिता सर निर्मल जल सोहा। संत हृदय जस गत मद मोहा।।
(मानस, 4/15/4)
सन्त हृदय नवनीत समाना।
कहा कबिन्ह परि कहै न जाना।।
(मानस, 7/124/7)

श्रमणी शबरी को उपदेश के क्रम में भगवान् ने कहा :

नवम सरल सब सन छलहीना।
मम भरोस हियं हरष न दीना।।
(मानस, 3/35/5)

भक्ति का नवम सोपान है सर्वतोभावेन समर्पण! हृदय में मात्र मेरा भरोसा हो।

मानसरोवर का रूपक बताते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं :

सुमति भूमि थल हृदय अगाधू। वेद पुरान उदधि घन साधु।।
बरषहिं राम सुजस बर बारी। मधुर मनोहर मंगलकारी।।
(मानस, 1/35/3-4)

सुन्दर बुद्धि भूमि है। उस बुद्धि के अन्तराल में हृदय ही गहरा स्थान है। वेद-पुरान समुद्र हैं और उसी से जल लेकर मेघमाला की तरह संत भगवान् के मधुर, मनोहर और मंगलकारी सुयशरूपी जल की वर्षा करते हैं।

सारांशतः भगवान् हृदय में, रावण की मूर्खता हृदय में, उपदेशों की धारा हृदय में, बाण से आहत हृदय, सृष्टि के सारे कृत्य हृदय से ही सञ्चालित होते हैं।

वास्तव में हृदय यौगिक शब्दकोष का शब्द है जो वैदिक, गीतोक्त धर्मशास्त्रीय शब्द है। साधना-प्रक्रिया के अन्तर्गत महापुरुषों ने जिस हृदय में भगवान् का निवास बताया, उसे हृदयंगम करने के लिए तीन शरीरों के तीन हृदयों पर ध्यान अपेक्षित है।

शरीर तीन हैं- स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर। सन्त कबीर ने भी शरीरों की ओर इङ्गित किया :

कबिरा कबिरा क्या करै, सोधो सकल शरीर।
आशा तृष्णा बस करे, सोई दास कबीर।।

कबीर सिद्ध हैं, महापुरुष हैं, कबीर अच्छे महात्मा हैं। - इस प्रकार क्या कबीर-कबीर की रट लगाए पड़े हो। **'सोधो सकल शरीर'**- सकल अर्थात् सभी, शरीर कई होते हैं उनकी शोध करो। पहला है स्थूल शरीर जो पंचभौतिक पिण्ड है, जिसे हम-आप देखते हैं, स्पर्श कर सकते हैं। इसे सञ्चालित करने वाला सूक्ष्म शरीर है जो मन का संसार है। मन का निरोध होते ही दृष्टिगोचर होने लगता है। कारण शरीर-आत्मा की वह प्रशक्ति जो संसार (वृत्ति) को धारण कर स्थित है। सबका कारण चेतन प्रकृति ही जीवात्मा कहलाती है। अपना परिचय देकर ईश्वरीय विभूतियों से विभूषित कर यह शरीर भी शान्त हो जाता है और उसके अन्तराल में जो शेष है, वहीं परमात्मा है। हृदय की इस गहराई में परमात्मा का निवास है। उसके दर्शन और स्पर्श के साथ ही प्रकृति सदा के लिए विलीन हो जाती है, पुरुष अपना सहज स्वरूप प्राप्त कर लेता है। **'कहत कबीर सुनो भाई साधो, नहिं तहं द्वैत बखेड़ा।'**- वहां द्वैत का द्वन्द्व नहीं है। कबीर कहते हैं कि तीनों शरीरों की इसीलिए **'आशा तृष्णा वश करै, सोई दास कबीर।'**- आशा और तृष्णा का निरोध कर जो भी इन तीनों शरीरों की शोध कर ले, वहीं दास है, वही कबीर है। इतना हमने किया, इतना तुम कर लो तो तुम भी कबीर हो जाओगे। यह स्थिति सबके लिए सुलभ है, यह अभ्यासजन्य है।

इसी का चित्रण महर्षि पतञ्जलि ने **'योगदर्शन'** में किया है -

कर्माशुक्लाकृष्णं योगिनस्त्रिविधमितरेषाम्।। (4/7)

ध्यान के पश्चात् जो प्राप्ति वाला योगी है, उसका लक्षण बताते हुए महर्षि कहते हैं कि योगी के कर्म अशुक्ल और अकृष्ण होते हैं अर्थात् योगी के कर्म के न शुभ परिणाम निकलते हैं और न अशुभ संस्कार ही बनते हैं। अन्य सबके कर्म तीन प्रकार के होते हैं।

भगवान् श्रीकृष्ण 'गीता' में कहते हैं -

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः।
आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते।। (3/17)

अर्जुन! जो आत्मतृप्त है, आत्मस्थित है, जिनका योग पूर्ण है, उस पुरुष को कर्म करने से न कोई लाभ है, न कर्म छोड़ देने से कोई क्षति, क्योंकि अब उसे कोई प्राप्त होने योग्य वस्तु अप्राप्त नहीं तो पुकारेगा किसे और किसलिए? न ही उसके पीछे कोई विकार है तो काटेगा किसे? किन्तु महर्षि पतञ्जलि के अनुसार अन्य लोगों के कर्म तीन प्रकार के होते हैं : कृष्ण, शुक्ल और मिश्रित, जो शुभ, अशुभ और शुभाशुभमिश्रित परिणाम देते हैं और जन्म-जन्मान्तरों तक कर्ता का पीछा करते रहते हैं :

जातिदेशकालव्यवहितानामप्यानन्तर्यं
स्मृतिसंस्कारयोरेकरूपत्वात्।।
(योगदर्शन, 4/9)

जाति अर्थात् जन्म, देश अर्थात् किसी भी स्थान, कूकर-शूकर, पेड़-पौधा कोई भी योनि और काल अर्थात् समय- इन तीनों का व्यवधान रहने पर भी कर्म संस्कार के प्रकट होने में व्यवधान नहीं पड़ता, क्योंकि स्मृति और संस्कार दोनों का एक ही स्वरूप है। स्मृति में वहीं उभरता है जो संस्कारों में सञ्चित है। संस्कारों की गति अबाध है। ये जन्म-जन्मान्तरों में यत्र-तत्र सर्वत्र कर्ता का अनुगमन करते हैं।

कागभुशुण्डि जी को शंकरजी का आशीर्वाद था कि हजार जन्मों के पश्चात् राम भक्ति मिलेगी। अनेक जन्म मिले, अनेक देशों में गए, कालचक्र से गुजरे किन्तु कोई व्यवधान नहीं पड़ा। अन्ततः उन्हें अविरल राम भक्ति प्राप्त हुई :

कवनेउं जन्म मिटिहि नहिं ग्याना।
सुनहि सूद्र मम बचन प्रवाना।।
(मानस, 7/108/8)

क्रमशः

एक सहः सम्पद

मननीया न्यायमूर्ति

राजकुमारी अभिलाषा कुमारी

-न्यायिक सदस्य लोकपाल

राजकुमारी अभिलाषा कुमारी को मणिपुर उच्च न्यायालय की पहली महिला मुख्य न्यायाधीश बनने का गौरव प्राप्त है। वहां से सेवानिवृति के उपरान्त मई 2018 में उन्हें गुजरात मानवाधिकार आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। यहां का कार्यकाल पूरा होने से पूर्व ही 23 मार्च 2019 को उन्हें लोकपाल कमेटी में बतौर न्यायिक सदस्य नियुक्त कर सम्मानित किया गया है। अभिलाषा कुमारी का देश के लोकपाल के सदस्य के रूप में कार्यभार संभालना समाज के लिए बड़े गौरव की बात है कि समाज की बेटी ऐसे सम्मानजनक पद पर पहुंची है। अभिलाषा कुमारी हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्रसिंह की सुपुत्री है जिनका जन्म 23 फरवरी 1956 को शिमला में हुआ था। उन्होंने लॉरेंटो कान्वेण्ट ताराहाल स्कूल शिमला से दसवीं पास करने के बाद इन्द्रप्रस्थ कॉलेज दिल्ली से स्नातक व हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला से विधि में स्वर्ण पदक हासिल किया। 7 नवम्बर 1979 को आपका विवाह कुमार पृथ्वीराजसिंह गोहिल निवासी दारेद गुजरात के साथ संपन्न हुआ। अभिलाषा कुमारी सन् 1984 में अधिवक्ता बनी और 1995-2002 तक केन्द्र सरकार की अतिरिक्त अधिवक्ता रहीं। वह हिमाचल प्रदेश सरकार की कानूनी सलाहकार व अधिवक्ता रहीं। मार्च 2003 से दिसम्बर 2005 तक हिमाचल प्रदेश की महाधिवक्ता भी रहीं। इसके उपरान्त 9 से 22 फरवरी 2018 तक केवल 13 दिनों के लिए मणिपुर उच्च न्यायालय की पहली महिला मुख्य न्यायाधीश बनी जिसके बाद रिटायर हो गई। सेवानिवृति के बाद मई 2018 में उन्हें गुजरात मानवाधिकार आयोग का पांच वर्ष के लिए अध्यक्ष नियुक्त किया गया। यहां कार्यकाल पूरा होने से पूर्व ही 23 मार्च 2019 को उन्हें देश के लोकपाल में नियुक्त कर दिया जहां वे वर्तमान में कार्यरत हैं।

-कर्नल हिम्मतसिंह

पृष्ठ 4 का शेष....

अहसानमंद...

लोकतंत्र का महाभारत चुनाव ही होता है और अभी पूरे देश में यह महाभारत अपनी चरम स्थिति पर है ऐसे में यहां तटस्थता नामक कोई भूमिका नहीं होती, तटस्थता का अर्थ ही अपने आपको बचाना होता है या अधर्मी के प्रति अपने अंतर की कोमल भावनाओं का संरक्षण होता है इसलिए आवश्यकता है कि हम सब इस महान भारत की भारतीयता को बचाने के लिए प्रयत्नशील व्यक्ति को वोट करें, इस भूमि के प्रति कृतज्ञ व्यक्ति को वोट करें, अपने आपको इस महान राष्ट्र का अकिंचन सपूत सिद्ध करने को तत्पर व्यक्ति को वोट करें लेकिन स्मरण रखें कि बात व्यक्ति की हो रही है, किसी दल की नहीं क्यों कि दल वाले तो सभी अपने अपने नेताओं को राष्ट्र से ऊपर सिद्ध कर राष्ट्र को अपना अहसानमंद बनाने पर तुले हैं।

छायण गांव का प्राचीन इतिवृत

राजस्थान का इतिहास गौरवमय रहा है। यहां का चप्पा-चप्पा रण-आंगण है। यहां निपजे नर-नाहरों ने रक्तिम स्याही द्वारा करवाल की नोक व भाले की अणी से इतिहास रचा है, जो प्रशंसनीय है। विश्व-विश्रुत शक्ति स्थल पोकरण से 50 किमी. दूर नाचना मार्ग पर रेतीले धोरों से घिरा गांव है-छायण। अपने कलेजे में शताब्दियां समेटे यह गांव कई ऐतिहासिक घटनाओं का साक्षी रहा है। यह गांव कब व किसने बसाया, इसकी प्रामाणिक जानकारी अभी तक नहीं मिल पाई है। किंतु महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश से प्राप्त **'छायण की तवारीख'** के अनुसार छायण गांव वि.स. 1470 (सन् 1403) से पहले का बसा हुआ है। गांव में छः तळे (कुए) थे। इस कारण इसका नाम छायण पड़ा। पूर्व में यहां बुध भाटियों का वर्चस्व था। इस तरह कहा जा सकता है कि छायण 1400 ई. से पूर्व का बसा हुआ है। यहां यह बताना समीचीन रहेगा कि लोकदेवता बाबा रामदेवजी का ननिहाल छायण के बुध भाटियों के यहां ही था। कालांतर में कतिपय इतिहासकारों ने बाबा रामदेव के ननिहाल को जैसलमेर राजघराने से जोड़ दिया जो कि भ्रामक व निराधार है। बुध भाटियों के समय छायण में पड़िहार राजपूतों का प्रवेश हुआ जो इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना है। इतिहास प्रसिद्ध मंडोर शासक नाहड़देव पड़िहार की शम्सुद्दीन से लड़ाई हुई जिसमें वे वीरगति को प्राप्त हुए। तत्पश्चात् नाहड़देव के पुत्र राणा रूपसी (राणा रूपड़ा) मंडोर से छायण आ गए। उस समय यह बुध भाटियों की जागीर था। बुध भाटियों ने पड़िहारों को यहां बसने नहीं दिया किंतु बाद में वैवाहिक संबंध स्थापित करने की शर्त पर राणा रूपड़ा यहीं बस गया। राणा रूपड़ा ने एक अपनी बेटी व छः अन्य भाई बंधों की बेटियों का सगपण बुध भाटियों के साथ तय कर दिया। डॉ. उम्मेदसिंह रिनियां कृत **'इंदा राजवंश का इतिहास'** के अनुसार योजना के अनुरूप बुध भाटियों की चौदह बारातें बुलाई गई। बारतों को कांटों से बने बाड़े में ठहराया गया जिसमें राणा रूपड़ा ने बारूद बिछाकर आग लगवा दी। जिससे बुद्ध भाटियों की चौदह बारातें, सात पड़िहार व सात भील-मेघवाल कन्याओं सहित जल गई। मरते हुए पड़िहार कन्याओं ने राणा रूपड़े पर अपने विवाह की आड में बुध भाटियों को मारने की घटना पर क्षोभ प्रकट करते शाप दे दिया कि जागीरी के लोभ में पड़िहारों द्वारा जो किया गया है उसका परिणाम भुगतना होगा। ये पड़िहार कन्याएं कालांतर में **'रावत्रियां'** नाम से पूजी जाने लगीं। लोक-किंवदंतियों के अनुसार रामदेवरा के रावतसर तालाब में इन्होंने प्रकट होकर परचा भी दिया। बुध भाटी व पड़िहारों के वैमनस्य पर तत्कालीन ढ़ोलियों ने सारंगी पर गीत गाया, जिसके बोल हैं..

'घातां भली नहीं राणा रूपड़ा,
बुध कर पड़िहार'

यहां यह बताना समीचीन रहेगा कि राणा रूपड़ा से लेकर सूर पड़िहार तक मारवाड़ में पड़िहारों की पीढ़ियां अस्त-व्यस्त ही रहीं। सूर के दो बेटे इंदा व गोपाल हुए। कालांतर में इंदों का मंडोर पर पुनः आधिपत्य हुआ। तत्पश्चात् राव चूंडा को मंडोर दहेज में देने पर मंडोर से पड़िहारों का आधिपत्य समाप्त हो गया। छायण में पड़िहारों के बसने के पश्चात् भुट्टा, खालत, खोखर, सोढा, सिसोदिया, तंवर, भीड़कमल, राहड़, हमीर, मालदेव भाटी आदि राजपूत जातियां समय-समय पर आकर बस गई। हालांकि सभी के बसने का काल अलग-अलग है। साथ ही ब्राह्मण, दर्जी, नाई, खत्री, महाजन (बनिया), सोनार, सुथार, कुम्हार, मिरासी, भील, मेघवाल आदि जातियां भी बसती रही।

दीपचंद लिखित **'छायण की तवारीख'** के अनुसार छायण में लगभग 120 हाथ गहरे छः कुए व पांच तालाब थे। संवत् 1909 ई, (1852) में जैसलमेर व बीकानेर के सीमा-विभाजन के समय तीन कुए बीकानेर में चले गए। तीन कुए पक्के पत्थर से बने हुए थे। हालांकि ये सागरू कुए थे। तवारीख के अनुसार काळ-विखै में छायण के लोग आजीविका हेतु सिंध प्रांत के खानपुर जाते थे। संवत् 1925 में अकाल पड़ा। इस समय छायण में अनेक लोग मर गये थे, बस्ती कम हो गई थी। तत्पश्चात् गांव में 70-75 घर रह गए थे। छायण कभी फलौदी व पोकरण तो कभी जैसलमेर रियासत का हिस्सा रहा। यहां पर पांच शिलालेख मिले हैं। जिस पर कुछ लिखा नहीं हैं।

यहां के ऊंटों की नस्लें अच्छी थी। 175 रूपये कीमत के प्रमाण मिले हैं। साथ ही गाय व भैंस की नस्ल अच्छी न होने की पुष्टि होती है। सुप्रसिद्ध विदेशी इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने भुट्टा सोलंकियों के संदर्भ में छायण का उल्लेख **'छायन/छांहण'** नाम से किया है। देवीलाल पालीवाल ने टॉड कृत **'राजपूत जातियों का इतिहास'** में छांहण नाम से नामोल्लेख किया है। छायण गांव का जैसलमेर रियासत की राजनीति में महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप रहा है। धीरतसिंह व बस्तोजी खालत ने महारावल रामचंद्र को शासक बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसी प्रकार अनेकों युद्धों वारों में छायण के वीर-बांकुरों ने अपना बलिदान देकर इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में अपना नाम दर्ज कराया। इसी प्रकार संत चेतनपुरी बाबा, जो भुट्टा सोलंकी थे, ने अपनी तपस्या व साधना से लोक-मानस में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया। इनके परचे आज भी लोक-जिह्वा पर अमर हैं। इनकी बहन का विवाह चांदसर के लालसिंह सिसोदिया से हुआ था। उन्हीं के वंशज कालांतर में छायण आकर बस गये। इसी प्रकार छायण में बसने वाली प्रत्येक जाति का अपना अलग इतिहास रहा है। चेतनपुरी की ही तरह कालांतर में **'सती अमरकंवर भटियाणी'** के परचे प्रख्यात हुए, गांव के मध्य इनका मंदिर है। आजाद हिंद फौज के सिपाही गोविंदसिंह पड़िहार व शहीद गुमानसिंह भाटी छायण के गौरवमय इतिवृत्त की कीर्ति-कड़ियां हैं जिन्होंने कालांतर में इस गांव को विशिष्ट पहचान दी।

- महेंद्रसिंह सिसोदिया (छायण)

लोकसभा चुनाव और हम

राजस्थान में 29 अप्रेल और 6 मई को दो चरणों में लोकसभा चुनाव हैं। दोनों ही प्रमुख राजनीतिक दलों ने तीन-तीन राजपूतों को टिकट दी है। भाजपा ने जोधपुर, जयपुर ग्रामीण एवं राजसमंद से हमारे समाज के प्रत्याशी उतारे हैं वहीं कांग्रेस ने बाड़मेर-जैसलमेर, चित्तौड़गढ़ व अलवर से राजपूत प्रत्याशी को उतारा है। यह सुखद है कि किसी भी सीट पर राजपूत के सामने राजपूत नहीं है इसलिए हमारे लिए चयन को लेकर किसी प्रकार की दुविधा नहीं है। राजसमंद की टिकट की घोषणा होते ही **श्री प्रताप फाउण्डेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी** ने 6 अप्रैल को हमारे लिए मार्गदर्शन जारी कर दिया है कि हमें हमारे व्यक्ति को चुनने में राजनीतिक दल, पसंदगी-नापसंदगी, योग्यता-अयोग्यता, लगाव-विलगाव, मित्रता-दुश्मनी आदि को एक तरफ रखकर एक ही सामाजिक दायित्व के लिए कटिबद्ध होना है कि हमारे सभी 6 प्रत्याशी लोकसभा में पहुंचें। विभिन्न प्रकार के लोग विभिन्न तर्कों के साथ हमारी इस बात का विरोध कर सकते हैं लेकिन हमें एक ही बात ध्यान रखनी है कि जब तक हम राजनीतिक के संचालक नहीं बनेंगे तब तक देश की वर्तमान दशा को हमारे महान पूर्वजों के आदर्शों की ओर प्रवाहित नहीं कर सकते। हम जितनी इस पक्ष में उदासीनता बरतेंगे उतना ही उन लोगों के लिए स्थान खाली करेंगे जो हमारे शाश्वत सिद्धान्तों के प्रति उदासीन हैं। वर्तमान राजनीति में राजनीतिक दलों के टिकट हासिल करना चुनाव लड़ने जितना ही संघर्षपूर्ण है और विगत कई लोकसभा चुनाव के बाद ऐसा हो रहा है कि हमें 6 टिकटें इस प्रकार मिली हैं कि इन सबको हम लोकसभा में भेज सकते हैं। इस देश की शासन व्यवस्था में राजपूत की भागीदारी बढ़े यह हमारी ही नहीं बल्कि इस राष्ट्र की आवश्यकता है और इस आवश्यकता को गाहे-बगाहे राष्ट्र का जनमानस प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रकट करता रहता है ऐसे में हमारा सामाजिक ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय दायित्व है कि हम शत-प्रतिशत इकतरफा मतदान कर इस आवश्यकता को पूरा करने का माध्यम बनें। यदि हम लोकसभा क्षेत्रवार बात करें तो बाड़मेर-जैसलमेर की सीट हमारे लिए इस कारण महत्वपूर्ण है कि वहां नए समीकरण बन रहे हैं। कांग्रेस पार्टी से राजपूत उम्मीदवार खड़ा हुआ है एवं कांग्रेस के परम्परागत वोटों के साथ राजपूत वोट का मेल हो रहा है। यदि यह प्रयोग सफल होता है तो प्रदेश की राजनीति में एक नया समीकरण बनेगा जो दूरगामी परिणाम लाएगा। यह समीकरण पंचायत से लेकर संसद तक चुनावों को भविष्य में प्रभावित करेगा जो हमारे लिए लाभदायक होगा। साथ ही विगत लोकसभा चुनावों में एक पार्टी विशेष द्वारा हमें दरकिनार किए जाने का भी माकूल जवाब हम इस चुनाव में दे सकते हैं। जोधपुर लोकसभा क्षेत्र को परिसीमन के बाद राजपूत सीट माना जा रहा है। परिसीमन के बाद दोनों बार यहां राजपूत ही सांसद बने हैं। यदि इस बार हम यह उपलब्धि बरकरार नहीं रख पाए तो भविष्य में राजपूत की टिकट पर खतरा रहेगा। साथ ही जोधपुर लोकसभा क्षेत्र में हमारे उम्मीदवार के पक्ष में शत प्रतिशत मतदान इसलिए भी आवश्यक है कि यहां से हम केवल एक सांसद नहीं चुन रहे हैं बल्कि एक राजनीतिक पार्टी में लंबा चलने वाला भविष्य का नेतृत्व चुन रहे हैं जिसके संकेत उस राजनीतिक पार्टी का राष्ट्रीय नेतृत्व कई बार दे चुका है। किसी दल विशेष के प्रादेशिक नेतृत्व के रूप में हमारे व्यक्ति का होना अनेक प्रकार के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष लाभों का सृजन करता है, इस बात को समझकर हमें जोधपुर पर विशेष ध्यान देना चाहिए। राजसमंद के साथ भी जोधपुर वाली ही बात लागू होती है। परिसीमन के बाद अस्तित्व में आई राजसमंद सीट राजपूत सीट मानी जाती है। दोनों बार ही यहां से राजपूत ही सांसद रहे हैं। विगत चुनावों में तो टिकट ही दोनों पार्टियों ने राजपूत को दी थी ऐसे में इस बार यदि राजपूत प्रत्याशी यहां से नहीं जीती तो जैसे कांग्रेस ने इस बार राजपूत को टिकट नहीं दी वैसे ही भाजपा भी अगली बार ऐसा कर सकती है। चित्तौड़गढ़ सीट राजपूत सीट मानी जाती थी। जसवंतसिंह जी वहां से दो बार सांसद रहे। उससे पहले भी वहां से श्रीमती निर्मला कुमारी दो बार व महेन्द्रसिंह एक बार सांसद रह चुके हैं लेकिन विगत चुनावों में दोनों ही दलों ने राजपूतों को टिकट नहीं दी और परिणाम स्वरूप राजपूतों की बहुलता के बावजूद वहां से राजपूत सांसद नहीं बन पाया। इस बार कांग्रेस से वहां राजपूत को उम्मीदवार बनाया है। चित्तौड़गढ़ के राजपूतों के पास यह अवसर है कि वे इसे पुनः राजपूत सीट घोषित करवा सकते हैं बस आवश्यकता है शत प्रतिशत मतदान की, एक तरफा मतदान की। जयपुर ग्रामीण सीट भी विगत परिसीमन के बाद अस्तित्व में आई है। विगत चुनावों में विजयी हुए राजपूत प्रत्याशी इस बार पुनः मैदान में हैं, विगत पांच वर्षों में इन्होंने राष्ट्रीय नेतृत्व में अपना स्थान बनाया है एवं प्रथम बार सांसद बनने के बावजूद महत्वपूर्ण मंत्रालय संभाला है। ऐसे में उनमें भविष्य के एक लंबे चलने वाले नेतृत्व की संभावना है। हम यदि उन्हें दोबारा चुनकर भेजते हैं तो उनकी यह यात्रा परवान चढ़ेगी एवं समाज का एक होनहार नेतृत्व उभरेगा। अलवर सीट से प्रत्याशी भी कांग्रेस के केन्द्रीय नेतृत्व की किचन केबीनेट के सदस्य हैं। विगत कांग्रेस सरकार में भी आपके पास केन्द्रीय मंत्री का दायित्व था। कांग्रेस में यह विडंबना रही है कि केन्द्रीय नेतृत्व में राजस्थान से वहां हमारी ढंग से पैरवी नहीं हो पाई। अब ये केन्द्र में अपना स्थान बनाने में कामयाब हो रहे हैं ऐसे में इनको मजबूत करना हमारा दायित्व है और यह भी इनके पक्ष में शत प्रतिशत एक तरफा मतदान करने और करवाने से ही संभव है। अनेक समाजबंधु इस अवसर पर अनेक शिकायतें गिनाते हैं एवं कमियां भी बताते हैं। इन शिकायतों और कमियों को नकारा नहीं जा रहा लेकिन विचारणीय यह है कि यह उचित समय नहीं है इन सब बातों का। हो सकता है व्यक्तिगत रूप से प्रत्याशी विशेष हमें ठीक नहीं लग रहा हो लेकिन समाज चरित्र की मांग व राजपूत को आगे लाने की राष्ट्रीय आवश्यकता की मांग यह कहती है कि इस अवसर पर व्यक्तिगत शिकायतें गौण होनी चाहिए और यदि हम समाज और राष्ट्र की मांग समझकर यह काम करेंगे तो फिर यह शिकायतें भी नहीं उभरेंगी इसलिए आएं हम सब सामूहिक प्रयासों द्वारा लोकसभा में राजस्थान से 6 राजपूतों को सांसद बनाने को कृत संकल्प होकर क्रियाशील होवें।

न्यूज वन-व्यू

बैंगलूर में गणगौर पूजन

राजपूत समाज कर्नाटक की महिला शाखा द्वारा बैंगलूर के कॉटनपेट स्थित समाज भवन में गणगौर महोत्सव मनाया। बड़ी संख्या में प्रवासी समाज बंधु अपने परिवार सहित समारोह में शामिल हुए एवं पारंपरिक महोत्सव में अपनी जड़ों से जुड़े रहने का अहसास पाया।

सम्राट विक्रमादित्य की जयंती मनाई

विक्रमी संवत प्रारम्भ करने वाले महान सम्राट वीर विक्रमादित्य की जयंती जैसलमेर में नवरात्रा स्थापना के दिन मनाई गई। जैसलमेर शहर के दक्षिण दिशा में निर्माणाधीन आद्यशक्ति हरसिद्धि मंदिर प्रांगण में हुए इस कार्यक्रम में वक्ताओं ने चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य के जीवन पर अपने विचार प्रकट किए।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org